सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 188

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 38
अगस्त – 2020

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधु भगिनियों

मार्गदर्शन–जन्माष्टमी
01.09.1961

श्री कृष्ण ने गीता दुर्योधन को बताई। यह कहने का कारण यह है कि

अर्जुन– योद्धा।

दुर्योधन – युद्ध में जो पीछे हटता है वह।

अर्जुन ने धनुष नीचे रखा इसलिए वह दुर्योधन हुआ, और इसीलिए उसे गीता बताई गई। "मुझे यह पसंद नहीं" इस वाक्य के बारे में यह है कि, अर्जुन को स्वकीयों (सगे संबंधियों) को युद्ध में मारना उचित नहीं लगा, मतलब "युद्ध मुझे पसंद नहीं', ऐसा अर्जुन ने कहा। उसी समय 'गीता का जन्म हुआ। परमपूज्य बाबा ने 'आप मुझे क्या दोगे?' यह जो सवाल सबसे पूछा, उसका सही जवाब कोई भी नहीं दे पाया। फिर परमपूज्य प.पू. बाबा ने बताया कि–"यह मुझे पसंद नहीं" यह वाक्य ही मुझे दो क्योंकि वैयक्तिक जीवन से लेकर आंतराष्ट्रीय जीवन तक की अशांतता–"मुझे यह पसंद नहीं" यह कहने की वजह से ही निर्माण होती है।

निष्कर्ष : 'युद्ध मुझे पसंद नहीं' इस कल्पना का त्याग करने के लिए श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा, यह बात यह 'अमर संदेश' है। परमपूज्य बाबा ने 'यह मुझे पसंद नहीं' इस वाक्य का उच्चार और आचरण वैयक्तिक जीवन में मत करो, इतना कहकर विषय पूर्ण किया।

आरंभ में प.पू. बाबा ने बताया कि आपने अभी तक भावना की भाव से पूजा नहीं की। सामने की मूर्ति में या तस्वीर में अंशमात्र में परमेश्वर तत्व समाया है, यह मानकर आप उस तस्वीर की पूजा करते हो परन्तु आजतक आपने भावना को भगवान मानकर उसकी पूजा नहीं की। जिस क्षण आप भावना को ही भगवान मानोगे, उसी समय परमेश्वर और आप एक ही थाली में अन्न खाओगे।

सिद्धि व साध्य : उपासना द्वारा वैयक्तिक आत्मशक्ति बढ़ने के बाद उस आत्मशक्ति का उपयोग वैयक्तिक इच्छापूर्ति के लिए किया तो उसे सिद्धि कह सकते है। ऐसी आत्मशक्ति बढ़ने के बाद किसी को अगर लगता है कि, यह निर्जन प्रदेश है, यहाँ सब सुविधाओं से सुसज्ज ऐसा रमणीय स्थल होना चाहिए, तो ऐसी इच्छा होने के बाद वह उस इच्छा की लहरें समाज पर फेंकता है, और उसके सामर्थ्य से उसके सहवास में जो–जो आता है उनपर उस इच्छा शक्ति का प्रभाव पड़ने से वह 3कुछ भी करने के लिए जैसे कि, धनधान्य (पैसा और अनाज) देने के लिए आगे आता है। लेकिन अगर वह सत्पुरूष जिंदगी भर ऐसी सिद्धि का अवलंब करता रहेगा तो उसका जीवन अंत में मिट्टी मोल (मिट्टी की कीमत जैसा) हो जाता है, तथा उसके मृत्यु के पश्चात् उसके द्वारा स्थापित किए मठ में झगड़े, खून खराबा आदि कुकर्म होते है। इसके विरूद्ध दुनिया में बिना चमत्कार किए प्राणिमात्र का कल्याण हो यह साध्य रखने वाले और उसके लिए प्रयत्न करने वाले सत्पुरूष भी होते है। उनका कार्य समई (भगवान के पास जो तेल का बड़ा दिया जलाते है वह) या बिजली के दिए जैसा होता है। समई का तेल खत्म होने से वहाँ अंधेरा छाता है, परन्तु सिद्धि का कार्य बिजली के बल्ब जैसा होता है जो कभी खत्म नहीं होता, आवश्यकतानुसार चलता रहता है। जैसे बटन से लाईट बंद करने से ना ही उसका फिलामेंट जल जाता है ना ही करंट खत्म होता है और फिर से बटन दबाकर लाईट चालू की जा सकती है।

आप जो संकल्प लेते हो उसमें संकल्प और अपेक्षा ये दोनों होती है। **"मैं महापापी हूँ" ऐसा मानना गलत है।** गतजन्म में थोड़ा तो भी पूण्य था इसलिए यह प्रमाणबद्ध विकृति रहित शरीर और कुलीन खानदान में जन्म प्राप्त हुआ। गतजन्म के पातक प्रमादों के कारण जो दुःख इस जन्म में भुगतने पड़ रहे है, वे रू. में केवल चार आना ही (एक चौथाई हिस्सा) आपके हिस्से में आए है। आपका पहला जन्म खत्म होने के बाद उस जन्म का काया, वाचा, मन नष्ट हो गया। इसलिए उसका (4 x 3=) 12 आना दुःख वातावरण में तरंगता रहा। यदि आपका गतजन्म मानों 60 साल का था और उसमें आपने एक साल पूण्य किया होगा तो उतने ही पूण्यसंचय के कारण आपको यह नरजन्म प्राप्त हुआ है। अतः यह जन्म पापों के कारण मिला यह समझना भ्रम है और गलत है।

आपके गतजन्म के उस एक वर्ष के पूण्य के मन पर इस जन्म का संस्कार हुआ और उस संस्कारित मन ने उम्र के 20 साल तक ज्ञानोपार्जन और नौकरी मिलने हेतु ज्ञान संपादित किया तथा विचार ग्रहण किए। तद्पश्चात् जब आप नौकरी करने लगे तब आपके विचारों की जगह विकारों ने ली। नौकरी मिलने से पहले कॉटन की पँट पहनने वाला पहली तनख़्वाह मिलने पर जिसने 10 साल नौकरी की है वह वुलन पँट पहनता है इसलिए अपने लिए वुलन की पँट सिलवाता है। यहीं उसके विकारमय जीवन का आरंभ होता है। नौकरी में मिलने वाली तनख़्वाह यह तुम्हारे वैयक्तिक ऋणानुबंध पर अवलंबित है, इतना ही नही तो तुम्हारी धर्मपत्नी या तुम्हें भावी काल में होने वाले बच्चे आदि इतरेजन के ऋणानुबंध भी आपसे जुड़े रहते हैं। विचारों की जगह विकारों ने लेने से पूर्वजन्म के ऋणानुबंध के 12 आने दुःख जो ऊपर वातावरण में होते है, वे नीचे आकर उनमें आपके प्राप्त जीवन के चार आना दुःख में मिलकर उनका पूरा एक रूपया दुःख बनता है। उसका उदाहरण इस प्रकार है कि, जैसे किसी के सिर में दर्द है और वह दो महीने दुःखने वाला है ऐसा ऋणानुबंध है ऐसा मानलो। अगर उसने अधीर होकर स्पेशलिस्ट के पास जाकर औषधोपचार पर 100 रू. खर्च किए तो यदि उसकी आमदनी 200 रू. है तो यह खर्च उसने खुद ही बढ़ाया और दुःख को आमंत्रित किया ना?अर्थात इस दुःखमय जीवन के लिए आप और आपका अज्ञान ही जिम्मेदार है ना?और आपका संकल्प भी गलत!

अपने दुःख कम हो ऐसी अपेक्षा आपने करना गलत है। इसकी वजह से आप अपने उन ऊपर तंरगते दुःखों को बुलावा देते हो। आपका संकल्प ही ऐसा होता है, इसीलिए आपने किसी भी 'प्रसाद' का अनुष्ठान लगाते ही कौटुंबिक कलह, अशांति इत्यादि बढ़कर वे आपको परेशान (त्राही भगवान) कर देते है।

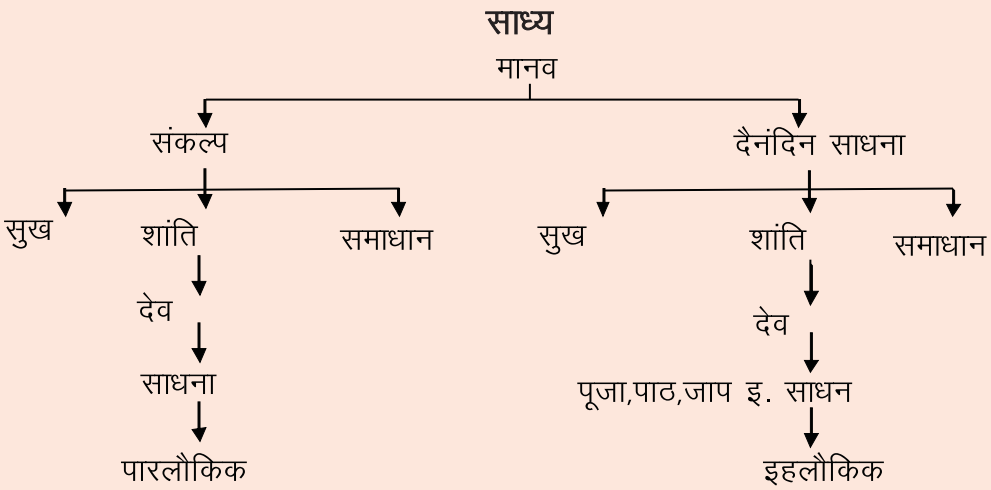

संकल्प कैसा होना चाहिए

संकल्प ऐसा हो कि, "हे प्रभु, जन्मऋणानुबंधों के जिन पातक प्रमादों की वजह से ये दुःख मेरे हिस्से आए है उन पातक प्रमादों की पुनरावृत्ती मेरे हाथों से ना हो।" इसी मार्ग द्वारा तुम्हें निरंतर सुख, शांति समाधान मिलेगा। इस दुःख के बारे में यह बताना है कि, सुख के साथ दुःख रहेगा ही, बल्कि सुख की मिठास समझने के लिए ही दुःख है।

पूण्य की वजह से जीवन का लाभ हुआ ऐसा कहते समय, उसके लिए यह मिसाल है कि किसी आदमी के खेत में 20 मन (800 किलो) चावल की फसल हुई। उसमें से 18 मन खाया और दो मण बीज के लिए बचाकर रखा, तो अगले साल जो खेत में फसल हुई वह 18 मण अनाज से ना होकर 2 मन बचाए हुए अनाज से हुई।

जीवन यह एक गाड़ी है। पूर्व पूण्याई के कारण उसका सफर अब तक घाटी के (चढ़ाई के) नीचे तक ठीक तरीके से हुआ। लेकिन उसके बाद जीवन का विकारमय प्रवास शुरू होकर, जीवन में दुःख रूपी घाटी (चढ़ाई) आने के बाद उसे ईश्वर कृपा का दूसरा इंजन जोड़े बिना उसका आगे का प्रवास हो ही नहीं सकता। जीवन जितना अधिक विकारमय उतनी भगवान की संख्या (वर्गवारी) ज्यादा। दुःख आने पर पूजा, होमहवन, पाठ आदि के लिए आपको ज्यादा समय लगता है, लेकिन सुख के साथ वे दुःख के भी साधन होते है। वे जीवन में शीशे जैसे है। आपके जीवनरूपी खेत में जो आपने बोया उसके सिवा जो अनावश्यक भी उग आया है, वे आपके विकार है। उन्हे आप निकाल दो और जाप, पूजापाठ, होमहवन करने से सुख मिलेगा ऐसी अपेक्षा मत रखो।

देवादिकों का ऋणानुबंध

देवादिकों का ऋणानुबंध कहाँ तक है?आपको जो अन्न मिलता है, वह आप ईश्वर को भोग चढ़ाकर समर्पित करते हो। उस वक्त आपने यह कहना चाहिए कि, 'हे परमेश्वर, यह अन्न मुझे आपके कृपाशिर्वाद से प्राप्त हुआ है। अब मैं आपसे इतना ही माँगता हूँ कि, जिस गेहूँ की रोटी या मिश्टान्न आपने मुझे दिया, वह गेहूँ मानव के उदर निर्वाह के लिए दुनिया के अंत तक निरंतर उत्पन्न होने दीजिए। आपने यह व्यक्त करने से आपका देवादिकों का ऋणानुबंध खत्म हुआ यह समझ लीजिए।

निवेदन

दिनांक 15 अगस्त 1962 को स्वतंत्रता दिवस और रक्षा बंधन एक ही दिन आए थे। हमेशा की तरह सद्गुरु चरणों में राखी अर्पण करने भक्त इकठ्ठा हुए थे। आरती के बाद प.पू. ख्वाजा बंदेनवाज जी (गुलबर्गा) का आगमन वं. दादाजी के माध्यम में हुआ। उन्होंने राश्ट्रोद्धार की प्रार्थना बताई और निम्नलिखित संदेश दिया–

नारली पूर्णिमा हर साल आती है (महाराष्ट्र में रक्षाबंधन के नारली पूर्णिमा कहा जाता है)। इस दिन आप नारियल गिरी मिश्रित मीठे चावल बनाते है और खाकर सुस्त (ढीले) हो जाते है। 15 अगस्त भी हमारा तौहार है यह याद रखो। स्वतंत्रता पाने के लिए अनेक लोगों ने अपना बलिदान दिया है स्वातंत्र्य मिल गया मतलब हम सुखी हो गए ऐसा नहीं है। अब आपने राष्ट्र को उभारना है, राष्ट्र का विकास करना है। अतः आपको नागरिक होने का कर्त्तव्य निभाना है। देश का नागरिक होने के नाते आपका प्रथम कर्त्तव्य यह है कि आप राष्ट्र पुरुषों के विरुद्ध अपशब्द बोलना बंद कीजिए। आप गुरुमार्गी है इसलिए आपकी जिम्मेदारी बहुत बड़ी है। रक्षाबंधन की जिम्मेदारी की तरह ही देश की रक्षा करने की जिम्मेदारी भी आपकी है। परमार्थ का अर्थ केवल ईश्वर सेवा नहीं है तो जो भी ईश्वर निर्मित है उसकी प्रेमपूर्वक सेवा! इसी में राष्ट्रसेवा समाहित (सम्मिलित) है।

वं. दादाजी – आपकी श्री सद्गुरु से भेंट हुई है मतलब आपका जीवन बहुमूल्य है यह आपने समझना चाहिए। जो अटल है उसे श्री सद्गुरु के अलावा कोई बदल नहीं सकता। आपकी श्री सद्गुरु से भेंट हुई है इसका आपने बोध लेना है (सीखना है) उसका शोध नहीं लेना है। गुरुभेंट यह एक योग्य है योगायोग नहीं! योग मतलब निश्चित संकेत है। योगायोग मतलब किसी एक घटना के लिए या सिर्फ उस पल या क्षण के लिए होता है। आपकी गुरुभेंट यह एक निश्चित संकेत है।

आपकी साधना की शक्ति औरों के जीवन के लिए है। आपका जीवन भिन्न कारण के लिए है इसका एहसास आपको हमेशा रहना चाहिए। मैं जब सैन्य (military) में था तब वहाँ बमबारी हुई। सोलह लोगों में से हम केवल दो ही व्यक्ति जीवित रहे। उस समय मुझे ईश्वर का बोध हुआ। मैं जिंदा हूँ यह ईश्वर की करामात है। ईश्वर निश्चित है और मेरा जीवन भिन्न कारण के लिए है इसका मुझे एहसास हुआ। आपका जन्म किसलिए हुआ है यह आप नहीं जानते लेकिन श्री सद्गुरु को यह निश्चित रुप से पता है इसलिए उनके मार्गदर्शन के अनुसार चलना हर एक शिष्य का कर्त्तव्य है।

सायटोप्लाझम और एक्टोप्लाझम (cytoplasm & ectoplasm) यह शरीर के घटक है। सायटोप्लाझम मतलब जीवन धारा रस। इसमें पृथ्वी वायु और आकाशतत्व है। शरीर में एक्टोप्लाझम को बढ़ाने से इस शक्ति का उपयोग दूसरों के कल्याण के लिए कर सकते है। इस शक्ति का रक्षण करने के लिए पहले के जमाने में व्रत, उपवास, आदि करते थे लेकिन आज आप उस पद्धति से व्रत, उपवास नहीं कर रहे है। व्रत के पदार्थ खाकर आपका सायटोप्लाझम का प्रमाण बढ़ गया है। आपने अपनी नित्य तथा नियमित साधना द्वारा आपकी देह में 40% सायटोप्लाझम और 60% एक्टोल्लाझम यह प्रमाण बनाए रखना है तभी आपकी साधना की सार्थकता फली भूत होगी।

सेवक,

।। शुभं भवतु ।।

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible